ISSN - 2231 - 5837
RNI - UPBIL / 2011 / 38102
www.ijscjournal.com
Journal Impact Factor No. :8.01

This International Peer-Reviewed & Refereed Journal
is available in Print as well as Online

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)
(कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-विधि-वाणिज्य-विज्ञान, वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय द्विमासिक शोध पत्रिका)

Volume - 14 : Issue - 64 Mar. - Apr. 2025 Ghaziabad

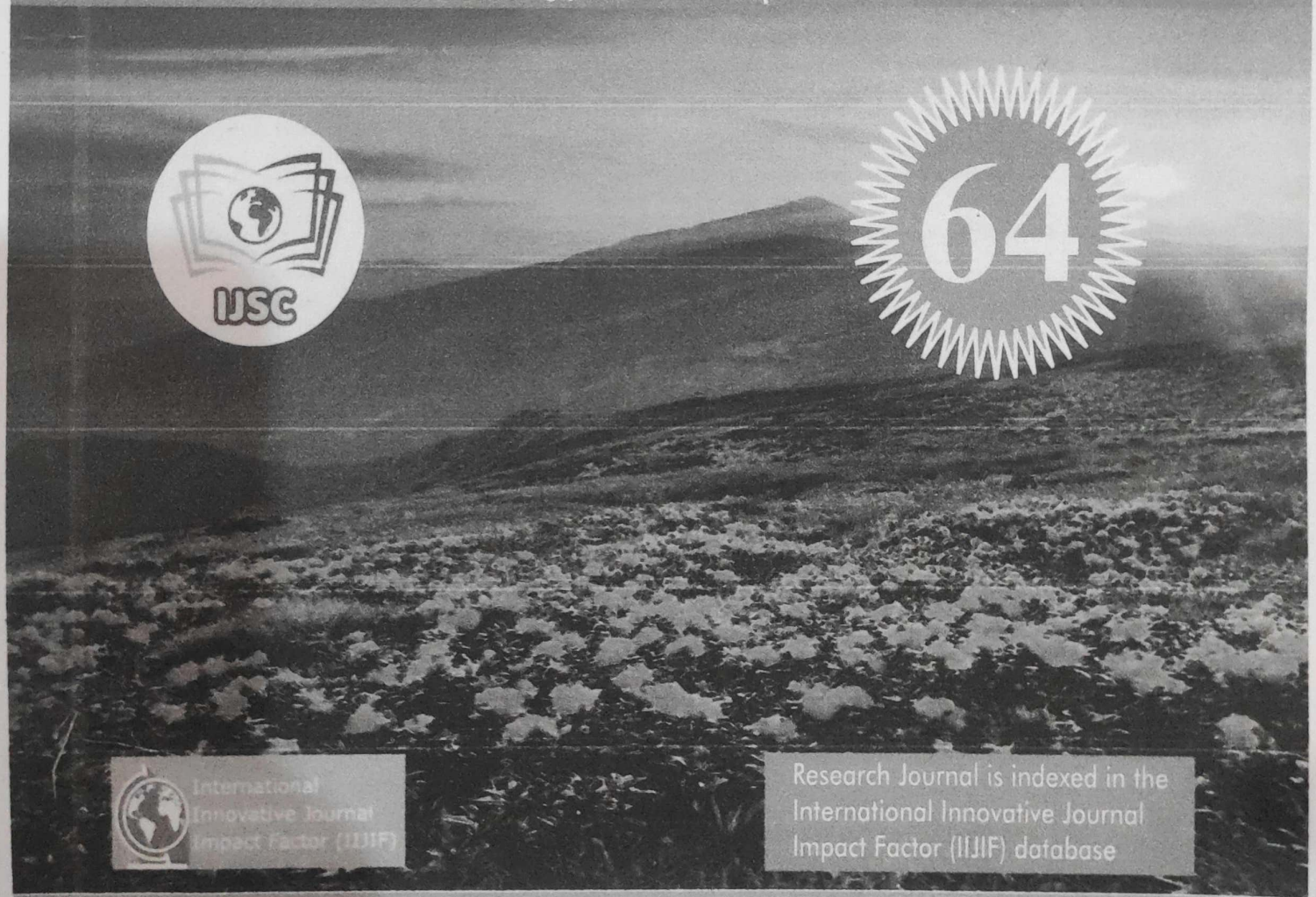

Dr. Hari Sharan Verma
D.Litt
Editor in Chief

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

Director
Education and Humanities
IFTM University, Moradabad

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
1.	भारतीय भाषाओं में शब्द समन्वय	डॉ0 उमेश कुमार सिंह	9–13
2.	अनुसूचित जाति/जनजाति में शैक्षिक अवसरों की समानता	डॉ0 भुपेन्द्र कौर	14–18
3.	ताकतवर सत्ता, कमजोर विपक्ष और निड़र साहित्यकार नागार्जुन।	देवेन्द्र कुमार	19–21
4.	बाबा बिसु राउत की गौ सेवा	मधु कुमारी, डॉ. पुष्पा कुमारी	22–25
5.	गढ़वाल हिमालय के लोकगीतों में अनुभूत ज्ञान व जीवन दर्शन	डॉ0 डी0एस0 भण्डारी	26–28
6.	पत्रकारिता के क्षेत्र में अज्ञेय जी का योगदान	डॉ0 उर्मिला कुमारी	29–31
7.	भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रीरामचरितमानस की महत्ता	दीपिका व्यास	32–36
8.	कोरोना काल की कविताएँ	डॉ० बाबू जोसफ	37–39
9.	भारतीय संस्कृति और समाजः रामचरितमानस के विशेष संदर्भ में	निक्की कुमारी	40–43
10.	सामाजिक चेतना की सकारात्मक भूमि पर पुष्पित शुभ्र काव्य वल्लरीः 'उजाले की ओर'	प्रो० डॉ० एस० एल० गोयल	44–46
11.	रस, उसका स्वरूप और रसात्मक बोध	रोहित केरकेट्टा	47–48
12.	राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी समस्याएँ	ऋतु रत्नम	49–56
13.	भारत में माइक्रोफाइनेंस	Dr. Saneh Yadav (Principal)	57–60
14.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय भाषाएं	डॉ0 मुकेश कुमारी	61–62
15.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक समस्याएं	डॉ0 पुष्पा रानी	63–66
16.	संस्मरणकार महादेवी सुभद्रा के साथ	डॉ0 दीनदयाल	67–69
17.	भारतीय कृषि : विकास प्रवृत्तियां, धीमी वृद्धि के कारण और भविष्य की चुनौतियाँ	डॉ० भूपेंद्र	70–75
18.	डिजिटलिकरण से ग्रामीण विकास (राजस्थान के टोंक जिले के सन्दर्भ में शोध अध्ययन का विश्लेषण)	डॉ0 निमिषा गौड़	76–81
19.	सामाजिक उत्थान : हिन्दी साहित्य की भूमिका	डॉ0 सुनीता रानी	82–83
20.	प्रकृति की सुरक्षा हमारा कर्तव्य	डॉ0 अनु	84–87
21.	विवाह एक धार्मिक संस्कार बनाम लिव इन रिलेशनशिप अधार्मिक आचरण	डॉ0 ममता	88–91
22.	उर्मिला शिरीष की कहानी रंगमंच में व्यक्त सामाजिक चेतना	पल्लवी पंडा	92–94
23.	गणित शिक्षा में नवाचार और शिक्षक की भूमिको	मधुबाला	95–99
24.	जयशंकर प्रसाद की कहानियों के नारी चरित्र प्रसाद के कथा साहित्य का परिपार्श्व	डॉ0 लता कुमारी	100–102
25.	भारतीय लोकनाट्य : कलात्मक एवं सांस्कृतिक वैविध्य	डॉ0 अंकिता उपाध्याय	103–107
26.	संख्या पद्धति का इतिहास एवं गणितज्ञों का योगदानः–	मधुबाला	108–112
27.	विकसित भारत 2047: एक संकल्प और चुनौतियां	डॉ0 गिरिराज सिंह	113–117
28.	ज्यामिति का परिचय एवं प्रमुख शाखाएं :–	मधुबाला	118–120
29.	नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य	डॉ0 सुनीता रानी	121–122
30.	आलोचक रोहिणी अग्रवाल के साहित्य चिंतन में भारतीय एवं पाश्चात्य संदर्भ : स्त्री आंदोलन	डॉ0 अनिल कुमार, रश्मि	123–127
31.	डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक के कहानी संग्रह 'मेरे संकल्प में मानवीय मूल्य'	सुनीता	128–131
32.	सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया : एक महान योद्धा और कुशल नेतृत्वशील व्यक्तित्व	डॉ0 अजय कुमार	132–133
33.	Contribution of Education in Human and Civil Rights	Dr. Luxmi Mishra	134–137
34.	An Impact of Higher Education Institutions in boosting Entrepreneurship Ecosystem	Hansa Verma, Dr. Sarina Asif	138–143
35.	An Overview Of Welfare Schemes Promoting Women's Empowerment In India	Dr. Neha Sharma, Dr. Pooja Gupta	144–148
36.	The Survival of Creative Disciplines in the age of Artificial Intelligence(AI)	Dr. Ruchi Arora, Dr. Sonam Arora	149–152
37.	"The impact of Digital Innovation on the Accessibility of Mutual Funds in a Globalized Economy"	Dr.Anju Gupta, Ms. Sonia Gupta	153–156
38.	Significance Of The Knowledge Of Individual Differences	Prof. Raj Kumari Singh	157–159
39.	Digital Storytelling in Tourism: Engaging Travelers with AI and Social Media	Dr. Sarika Saini, Dr. Lalita Dhingra	160–162
40.	Social Exclusion and Schooling in India	Dr. ShwetaTripathi	163–169
41.	Factors Determining CO^2 Emission in BRICS Economies: Panel GLS Regression Analysis	Mukesh Bala and Shalini Malik	170–176

Director
School of Education and Humanities

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
42.	The Role of Social Media in Shaping Millennials' Online FMCG Buying Decisions: A Qualitative Study	Pooja	177–179
43.	Emoji as a New Mode of Communication: Evolution or Degradation of Language?	Dr. Sunita Yadav	180–182
44.	Voices Of Resistance In Anita Nair's Mistress	Jyoti Jaiswal, Dr. Sunita Rai	183–187
45.	Navigating Youth Identity and Socio-Political Challenges in Chetan Bhagat's The Three Mistakes of My Life	Dr. Poonam Rani	188–192
46.	Assessing Profile, Problems And Knowledge Of Nutrition Among Rural And Urban Anganwadi Workers	Ajit Vishwakarma	193–195
47.	Globalization of Retail Industry through AI: A Case Study of Amazon Go Stores	Dr. Bindu Roy, Ms. Shikha Raghav	196–200
48.	Love Waves In A N-layered Self-reinforced Transversely Isotropic Medium	Dr. Anita Sehrawat	201–205
49.	Mental Health Implications of Internship Programs Under NEP 2020 Among Physical Education Trainees	Dr Rambir Singh	206–207
50.	शब्दशक्ति	डॉ0 सुमन कुमारी, डॉ0 रामजी मेहता आदर्श	208–211
51.	विकसित भारत में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की भूमिका	डॉ0 हिमांशु कुमार	212–215
52.	श्रुति और स्वर का संबंध	डॉ0 सन्तोष कुमारी	216–217
53.	आधुनिक भारतीय चिंतन में शिक्षा की अवधारणा, एक दार्शनिक अध्ययन विवेकानन्द, टेगोर एवं अरविन्द के विशेष संदर्भ में	डॉ0 सन्तोष कुमारी आभा सहाय	218–220

Director
School of Education and Humanities
IFTM University, Moradabad

2 अनुसूचित जाति/जनजाति में शैक्षिक अवसरों की समानता

डॉ0 भुपेन्द्र कौर

सारांश–

शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है। शिक्षा मनष्य को जीवन जीने योग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होना है। शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विकास की धुरी है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में विचार करने तर्क–वितर्क करने के साथ–साथ निर्णय लेने की क्षमता का विकास तथा जीवन यापन करने की कला का विकास होता है। जिस प्रकार माता बच्चे की प्रथम गुरू होती है उसी प्रकार परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। जन्म के समय बच्चे का मस्तिष्क कोरी स्लेट के समान होता है। वातावरण के सम्पर्क में उसका मस्तिष्क ज्ञान से अंकित होता है, तथा पारिवारिक वातावरण का प्रभाव भी उसमें दिखाई पडने लगता है।

अनुसूचित जाति तथा जनजाति में पलने वाले बालक अपनी संस्कृति और धार्मिक क्रियाकलापों को अपनाता है लेकिन अन्य परिवार के बालक जिस प्रकार के वातावरण में रहता है। एक व्यावसायिक वातावरण में पलने वाला बालक व्यवसाय में रूचि लेता है उसी प्रकार एक नौकरशाह परिवार में पलने वाला बालक नौकरशाही को अपनाता है। जिस बालक का पारिवारिक वातावरण दूषित होता है, अधिकतर ऐसे परिवारों के बालक अपराध की तरफ मुड जाते है। अनुसूचित जाति तथा जनजाति के कुछ अशिक्षित परिवार बच्चो के विकास को समझने में असमर्थ है एवं सही मार्गदर्शन न मिल पाने से ये बच्चे परिवार तथा समाज में समायोजन नही कर पाते। देखने में आया है कि ऐसे बच्चों को दूषित वातावरण मिलने से उनकी रूचि, उपलब्धि और उनके आकाक्षाँ स्तर पर भी प्रभाव पडता है।

प्रस्तावना–यह शोध पत्र वर्तमान समय में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों की स्थिति को दर्शता है। ये दोनों समुदाय ऐसे है जिन्हें ऐतिहासिक और औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से अलग रखा गया है। भारत में अनेक जातियों को शूद्र, अछूत, निम्न या दलित जातियों के नाम सम्बोधित किया जाता है, उन जातियों को भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों का दर्ज दिया गया है। 1935 में भारत सरकार अधिनियम द्वारा पहली बार अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग किया गया। अनुच्छेद 341 में अनुसूचित जाति का उल्लेख किया गया। आकडों में पाया कि अनुसूचित जाति की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का 16.6 प्रतिशत है। जिसमें अनुसूचित जाति जनसंख्या का सबसे बडा भाग उत्तर प्रदेश में तथा मिजोरम में सबसे कम निवास करता है। 2011 की संख्या निम्न प्रकार से है–

अनुसूचित जातियाँ (Scheduled Castes)

- 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में भारत की 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है।
- पश्चिमी बंगाल और उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का 25 से 30 प्रतिशत प्रतिशत भाग अनुसूचित जातियों का है।

राज्य	अनुसूचित जातियों की जनसंख्या
उत्तर प्रदेश	35,148,377 (प्रथम स्थान)
पश्चिमी बंगाल	18,452,555 (द्वितीय स्थान)
बिहार	13,048,608 (तृतीय स्थान)

अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes)

- 2011की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 10,42,81,034 है, जो कि भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है लेकिन 2001 में यह भारत की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत थी।
- इनमें से अनुसूचित जनजातियों के 9,38,19,162 लोग ग्रामीण परिवेश निवास करते है, 1,04,61,872 लोग शहरी परिवेश में निवास करते है। अनुसूचित जनजातियो की कुल जनसंख्या का 11.3 प्रतिशत ग्रामीण परिवेश एवं 2.8 प्रतिशत शहरी परिवेश में निवास करती है।
- अनुसूचित जनजातियों की गणना 2011 के आधार पर अनुसूचित जनजातियों का अधिकतम अनुपात वाले राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश घटते क्रम में निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

राज्य	अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या (प्रतिशत) में
लक्षद्वीप	94.8
मिजोरम	94.4
नागालैंड	86.5
मेघालय	86.1
अरूणाचल प्रदेश	68.8

- अनुसूचित जनजातियों की गणना 2011 के आधार पर अनुसूचित

Director
School of Education and Humanities
IFTM University, Moradabad